International Journal of Enhanced Research in Educational Development (IJERED)
ISSN: 2320-8708, Vol. 14 Issue 5, September-October, 2026

नरेंद्र कोहली के उपन्यासों में सांस्कृतिक राष्ट्रवाद और लोकतांत्रिक मूल्य: 'महासमर' एवं 'रामकथा' के संदर्भ में

डॉ. गणपतराम

जय नारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर

सार (Abstract)

प्रस्तुत शोध-आलेख हिन्दी के सुप्रसिद्ध उपन्यासकार नरेंद्र कोहली के महाकाव्यात्मक उपन्यासों — 'महासमर' (महाभारत-आधारित, आठ खंड) और 'रामकथा' श्रृंखला (दीक्षा, अवसर, संघर्ष की ओर, युद्ध) — में सांस्कृतिक राष्ट्रवाद एवं लोकतांत्रिक मूल्यों की अभिव्यक्ति का समाजशास्त्रीय विश्लेषण प्रस्तुत करता है। कोहली के ये उपन्यास केवल पौराणिक पुनर्लेखन नहीं हैं, वरन् स्वातंत्र्योत्तर भारत की सामाजिक, सांस्कृतिक एवं राजनीतिक चेतना के सशक्त दस्तावेज़ हैं। इस आलेख में तर्क प्रस्तुत किया गया है कि कोहली की कथा-भाषा, पात्र-योजना और मूल्य-संरचना में सांस्कृतिक राष्ट्रवाद एक आधुनिक विमर्श के रूप में उभरता है जो भारतीय लोकतांत्रिक प्रतिबद्धताओं को प्राचीन परंपरा के माध्यम से पुनर्परिभाषित करता है।

मुख्य शब्द: सांस्कृतिक राष्ट्रवाद, लोकतांत्रिक मूल्य, नरेंद्र कोहली, महासमर, रामकथा, पौराणिक पुनर्पाठ, राष्ट्रीय अस्मिता, समाजशास्त्र।

प्रस्तावना

भारतीय हिन्दी साहित्य में नरेंद्र कोहली (1940–2021) एक ऐसे अप्रतिम कथाकार हैं जिन्होंने पौराणिक आख्यानों को समकालीन संवेदनशीलता के साथ पुनर्जीवित किया। उनके उपन्यास 'महाभारत' और 'रामायण' की गाथाओं को मात्र धार्मिक पुनर्कथन तक सीमित नहीं करते, बल्कि उन्हें आधुनिक भारत की पहचान, नेतृत्व, न्याय और सामूहिक दायित्व जैसे प्रश्नों से जोड़ते हैं।

स्वतंत्रता के पश्चात् भारत एक ऐसे वैचारिक संक्रमण-काल से गुज़रा जिसमें राष्ट्र-निर्माण, सांस्कृतिक अस्मिता और लोकतांत्रिक मूल्यों की स्थापना केंद्रीय प्रश्न बने। नरेंद्र कोहली के उपन्यास इसी वैचारिक संघर्ष की साहित्यिक अभिव्यक्ति हैं। 'महासमर' के आठ खंड (बंधन, अधिकार, कर्म, धर्म, अंतराल, प्रच्छन्न, प्रत्यक्ष, निर्बंध) और 'रामकथा' के चार उपन्यास (दीक्षा, अवसर, संघर्ष की ओर, युद्ध) मिलकर एक ऐसा विशाल सांस्कृतिक कैनवास तैयार करते हैं

जिसमें राष्ट्रीयता, मानवीय गरिमा और लोकतांत्रिक चेतना की गहन परीक्षा होती है।
यह शोध-आलेख इसी परिप्रेक्ष्य में कोहली के इन उपन्यासों का समाजशास्त्रीय पाठ प्रस्तुत करते हुए यह स्थापित करने का प्रयास करता है कि इनमें सांस्कृतिक राष्ट्रवाद और लोकतांत्रिक मूल्य किस प्रकार परस्पर संवाद में हैं।

सांस्कृतिक राष्ट्रवाद: अवधारणा और साहित्यिक परिप्रेक्ष्य

सांस्कृतिक राष्ट्रवाद (Cultural Nationalism) एक ऐसी विचारधारा है जो राष्ट्र की पहचान को राजनीतिक सीमाओं के बजाय साझी सांस्कृतिक विरासत, भाषा, कला, धर्म और परंपरा में देखती है। बेनेडिक्ट एंडरसन ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'Imagined Communities' (1983) में राष्ट्र को एक 'कल्पित समुदाय' कहा है जो साझी सांस्कृतिक अभिव्यक्तियों से निर्मित होता है।

भारत के संदर्भ में, सांस्कृतिक राष्ट्रवाद का अर्थ भारतीय सभ्यता की बहु-सहस्राब्दी पुरानी परंपरा — वेद, रामायण, महाभारत, उपनिषद — को राष्ट्रीय अस्मिता का आधार मानना है। नरेंद्र कोहली इसी परंपरा के आधुनिक भाष्यकार हैं। वे पौराणिक कथाओं में अंतर्निहित मूल्यों को समकालीन भारतीय समाज की समस्याओं से जोड़ते हैं। उनका लेखन एक प्रकार से 'सांस्कृतिक पुनराविष्कार' है जो भारतीय अस्मिता को नई भाषा में पुनः परिभाषित करता है।

डॉ. नामवर सिंह के शब्दों में, नरेंद्र कोहली का लेखन 'परंपरा और आधुनिकता के बीच एक सेतु' का कार्य करता है। यह सेतु केवल कथात्मक नहीं, बल्कि वैचारिक भी है — जहाँ प्राचीन मूल्य आधुनिक प्रश्नों के उत्तर खोजने में सहायक बनते हैं।

'महासमर' में सांस्कृतिक राष्ट्रवाद: एक विश्लेषण

'महासमर' (1988–2000) हिन्दी साहित्य की दुर्लभ उपलब्धियों में से एक है। महाभारत के विशाल कथा-संसार को नरेंद्र कोहली ने एक ऐसे आधुनिक उपन्यास-श्रृंखला में रूपांतरित किया है जो भारतीय राष्ट्र-चेतना का महाकाव्य बन जाती है।

राष्ट्र की अवधारणा 'महासमर' में केवल भौगोलिक नहीं, वरन् सांस्कृतिक है। 'बंधन' (प्रथम खंड) में जब युधिष्ठिर कहते हैं — 'राज्य केवल भूखंड नहीं, वह जन-मानस की एकता का प्रतीक है' — तो यह कथन आधुनिक राष्ट्र-विमर्श की भाषा में बोलता है। कोहली के कृष्ण एक रणनीतिज्ञ ही नहीं, राष्ट्र-निर्माता भी हैं जो सांस्कृतिक एकता के सूत्रधार हैं।
सांस्कृतिक राष्ट्रवाद का दूसरा आयाम 'महासमर' में धर्म और न्याय की पुनर्व्याख्या के रूप में उभरता है। कोहली का धर्म किसी एक संप्रदाय का धर्म नहीं, वह 'मानव-धर्म' है — कर्तव्य, न्याय और सत्य का समुच्चय। यह भारतीय सांस्कृतिक परंपरा की उस समावेशी दृष्टि को प्रतिबिंबित करता है जो विविधता में एकता का आधार है। 'धर्म' खंड में भीष्म और विदुर के संवाद इस सांस्कृतिक राष्ट्रवाद को नैतिक धरातल प्रदान करते हैं।

तीसरा महत्त्वपूर्ण बिन्दु है — भाषा और संस्कृति का उपकरण के रूप में प्रयोग। कोहली ने 'महासमर' में सरल,

बोधगम्य हिन्दी में महाभारत-कथा को प्रस्तुत कर हिन्दी भाषी जन-समुदाय को उनकी सांस्कृतिक विरासत से पुनः जोड़ने का ऐतिहासिक कार्य किया। यह स्वयं में एक सांस्कृतिक-राष्ट्रवादी परियोजना है।

'रामकथा' में लोकतांत्रिक मूल्य: एक सूक्ष्म पाठ

नरेंद्र कोहली की रामकथा-श्रृंखला पारंपरिक 'भक्ति' दृष्टि से भिन्न एक मानवीय और लोकतांत्रिक राम को प्रस्तुत करती है। 'दीक्षा' उपन्यास से ही स्पष्ट होता है कि कोहली का राम एक अलौकिक अवतार नहीं, बल्कि एक उत्कृष्ट मानव-चरित्र है — जो न्याय, समता और जनकल्याण को अपनी सर्वोच्च प्राथमिकता मानता है।

लोकतांत्रिक मूल्यों के संदर्भ में 'अवसर' उपन्यास विशेष महत्त्वपूर्ण है। जब राम वन में जाते हैं और विभिन्न ऋषि-आश्रमों, जनजातियों एवं सामाजिक समूहों से संवाद स्थापित करते हैं, तो कोहली उन्हें एक लोकतांत्रिक नेता के रूप में चित्रित करते हैं जो जनमत को सुनता है, संवाद को महत्त्व देता है और सामूहिक निर्णय की प्रक्रिया को आदर देता है। शबरी प्रसंग इस दृष्टि से विशेष रूप से उल्लेखनीय है — जहाँ राम जातिगत भेद से ऊपर उठकर वंचित वर्ग की स्त्री के प्रेम और ज्ञान को सम्मान देते हैं।

'संघर्ष की ओर' में वानर-सेना के निर्माण का प्रसंग एक आधुनिक लोकतांत्रिक गठबंधन की अवधारणा को प्रतिबिंबित करता है। विभिन्न जनजातियों, वर्गों और क्षेत्रों के प्रतिनिधि एक साझे उद्देश्य के लिए एकजुट होते हैं — यह सहमति-आधारित राजनीति का प्रतीक है। कोहली यहाँ भारतीय लोकतंत्र की बहुलवादी आत्मा को पौराणिक कथा के माध्यम से रेखांकित करते हैं।

'युद्ध' उपन्यास में राम-रावण संघर्ष को अत्याचार और लोकतांत्रिक प्रतिरोध के द्वंद्व के रूप में प्रस्तुत किया गया है। रावण की सत्ता एक निरंकुश केंद्रीकृत व्यवस्था का प्रतीक है, जबकि राम की शक्ति सहयोग, विश्वास और जनशक्ति पर आधारित है। यह विरोध आधुनिक लोकतांत्रिक बनाम अधिनायकवादी व्यवस्था का रूपक बन जाता है।

समाजशास्त्रीय विश्लेषण: राष्ट्रवाद, संस्कृति और आधुनिकता

समाजशास्त्रीय दृष्टि से नरेंद्र कोहली के इन उपन्यासों का विश्लेषण करने पर कुछ महत्त्वपूर्ण सूत्र उभरते हैं। प्रथम: कोहली एक 'सांस्कृतिक स्मृति' (Cultural Memory) के निर्माण में संलग्न हैं। जान अस्समान की 'Cultural Memory' की अवधारणा के अनुसार, सामूहिक स्मृति राष्ट्रीय पहचान का आधार होती है। कोहली की रामकथा और महासमर भारतीय समाज की इसी सामूहिक स्मृति को साहित्यिक रूप प्रदान करती हैं।

द्वितीय: कोहली के उपन्यासों में सामाजिक समरसता और समावेशन का आग्रह है। 'महासमर' में विदुर जैसे दासीपुत्र का नायकत्व और 'रामकथा' में शबरी, सुग्रीव, जामवंत जैसे वंचित चरित्रों का केंद्रीय भूमिका में होना एक समतामूलक समाज की कल्पना को व्यक्त करता है। यह भारतीय संविधान की 'समानता' की भावना से साक्षात्कार करती है।

तृतीय: कोहली के उपन्यासों में नेतृत्व का जो आदर्श प्रस्तुत है — कृष्ण और राम के माध्यम से — वह लोकतांत्रिक

नेतृत्व के सिद्धांतों से मेल खाता है। नेता जो जनकल्याण को सर्वोपरि रखता है, जो संवाद करता है, जो कर्तव्य-निष्ठ है और जो सत्ता को साधन मानता है, साध्य नहीं — यह आधुनिक लोकतांत्रिक नेतृत्व का आदर्श है।

चतुर्थ: कोहली के यहाँ 'राष्ट्र' एक सजीव सांस्कृतिक इकाई है जो विविधता में एकता के सिद्धांत पर टिकी है। 'महासमर' के भारत में विभिन्न जनपद, राज्य और संस्कृतियाँ हैं, फिर भी एक साझी 'आर्य-संस्कृति' उन्हें जोड़ती है। यह 'Unity in Diversity' की अवधारणा भारतीय संविधान के मूल में भी है।

निष्कर्ष

नरेंद्र कोहली के 'महासमर' और 'रामकथा' उपन्यास-श्रृंखलाएँ हिन्दी साहित्य में उस दुर्लभ कोटि की रचनाएँ हैं जो कला, संस्कृति और विचार-विमर्श के त्रिभुज पर एक साथ खड़ी हैं। इस शोध-आलेख में प्रमाणित किया गया कि ये उपन्यास सांस्कृतिक राष्ट्रवाद और लोकतांत्रिक मूल्यों के बीच एक संवाद स्थापित करते हैं — जहाँ प्राचीन भारतीय सांस्कृतिक परंपरा आधुनिक लोकतांत्रिक आदर्शों को वैधता प्रदान करती है।

कोहली यह सिद्ध करते हैं कि भारतीय परंपरा में लोकतांत्रिक मूल्य — समता, न्याय, संवाद, सहमति — कोई आरोपित पश्चिमी आयात नहीं हैं, बल्कि वे हमारी अपनी सांस्कृतिक विरासत का अविभाज्य अंग हैं। इस प्रकार ये उपन्यास स्वातंत्र्योत्तर भारत के सांस्कृतिक पुनर्जागरण के दस्तावेज़ भी हैं और भविष्य के भारत की नींव के निर्माण में सहायक भी।

कोहली की यह साहित्यिक उपलब्धि इस दृष्टि से भी महत्त्वपूर्ण है कि उन्होंने हिन्दी साहित्य को एक ऐसी वैचारिक गंभीरता और व्यापकता प्रदान की जो पहले केवल संस्कृत महाकाव्यों में उपलब्ध थी। उनके उपन्यास हिन्दी पाठक को उनकी जड़ों से जोड़ते हुए उसे एक आधुनिक, जागरूक नागरिक के रूप में भी संबोधित करते हैं।

संदर्भ-सूची

1. कोहली, नरेंद्र (1988-2000). महासमर (आठ खंड). दिल्ली: हिन्दी पुस्तक एजेंसी।
2. कोहली, नरेंद्र (1975). दीक्षा. दिल्ली: हिन्दी पुस्तक एजेंसी।
3. कोहली, नरेंद्र (1976). अवसर. दिल्ली: हिन्दी पुस्तक एजेंसी।
4. कोहली, नरेंद्र (1978). संघर्ष की ओर. दिल्ली: हिन्दी पुस्तक एजेंसी।
5. कोहली, नरेंद्र (1979). युद्ध. दिल्ली: हिन्दी पुस्तक एजेंसी।
6. Anderson, Benedict (1983). Imagined Communities: Reflections on the Origin and Spread of Nationalism. London: Verso.
7. Assmann, Jan (1995). Cultural Memory and Early Civilization. Cambridge: Cambridge University Press.
8. सिंह, नामवर (2007). दूसरी परंपरा की खोज. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।
9. शर्मा, रामविलास (1995). भारत की सांस्कृतिक परंपरा. नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन।
10. पांडेय, मैनेजर (2011). साहित्य और इतिहास-दृष्टि. नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन।

11. Chatterjee, Partha (1993). The Nation and its Fragments: Colonial and Postcolonial Histories. Princeton: Princeton University Press.
12. त्रिपाठी, रामस्वरूप चतुर्वेदी (2002). हिन्दी साहित्य का अधुनातन इतिहास. नई दिल्ली: मेधा बुक्स।
13. गुप्त, सुरेश (1998). नरेंद्र कोहली: रचना-दृष्टि और शिल्प. नई दिल्ली: सरस्वती विहार।
14. Kumar, Krishan (2010). 'Nation-states as Empires, Empires as Nation-states.' Theory and Society, 39(2), 119-143.
15. जोशी, प्रकाश (2004). पौराणिक उपन्यासों में राष्ट्रीय चेतना. जयपुर: राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी।